नत्थो मरी नहीं

कमलेश चौधरी
मो. 9813446370

साठ-बासठ साल के लगभग आयु, गौर, वर्ण, ऊँचा कद, मर्दानी कुरती, नीचे पुराने चलन का घाघरा, देशी जूती, माथे तक ओढ़ी गई जयपुरी छींट की ओढनी, गले में चाँदी की हँसुली, हाथों में सोने के कड़े, टखनों में छैलकड़ी, बारह महीने यही पहनावा बहुत ज्यादा सर्दी में कंधों पर सूती चादर, चेहरे पर सरलता, बातों में अपनापन, सबको अपनी सी लगती, यह थी पूरे गाँव की बुआ नत्थो। नत्थो अपने मायके में रहती थी सो काकी, ताई, भाभी जैसे रिश्तों का सवाल ही नहीं था। पूरे गाँव से उसका एक ही रिश्ता था, बुआ। बच्चों के साथ-साथ बड़ी आयु के लोग भी उसे बुआ कह कर पुकारते थे। गाँव में हर किसी को गाहे-बगाहे नत्थो की जरूरत पड़ती रहती थी। बच्चे के जन्म पर सोहर गाने के लिये, भजन, कीर्तन में ढोलक, चिमटे का इन्तजाम करने के लिये, लड़की की शादी में सुहाग तथा लड़के की शादी में घोड़ी गीत गाने के लिये, गोबर की सांझी बनाने के लिये बुआ नत्थो को पुकारा जाता था। वह भी झट से हाजिर हो जाती। बुआ अपने मायके में क्यों रहती थी, इसकी एक दु:ख भरी कथा है। पन्द्रह साल की होने पर नत्थो का विवाह बीस-बाईस कोस की दूरी पर बसे गाँव रामगढ़ के अतर सिंह के साथ हुआ था। तीन भाई, सास-ससुर, एक जेठ व एक अविवाहित देवर, भरा पूरा परिवार था नत्थो की ससुराल का। अतर सिंह व नत्थो का जीवन खुशियों से भरपूर था। मगर नत्थो की तकदीर में ये खुशियाँ लंबे समय तक विधाता को स्वीकार नहीं थीं। अतर सिंह को टाईफाइड हो गया। शुरू में इलाज करने में काफी लापरवाही के कारण निमोनिया का भी असर हो गया। काफी भाग-दौड़ की। इलाज करवाया, झाड़-फूंक का भी सहारा लिया। मगर होनी को कुछ और ही मंजूर था। शहर के बड़े अस्पताल तक ले जाने में देर हो चुकी थी। बड़े डॉक्टर ने काफी प्रयास किया मगर अतर सिंह के प्राणों की रक्षा नहीं हो सकी।

तीन भाईयों में अब दो रह गये। जेठ विवाहित और बाल-बच्चे वाला था। छोटा देवर इंद्र सिंह अविवाहित था। नत्थो के मायके और ससुराल के बड़े बुजुर्गों ने विचार विमर्श के बाद

निर्णय लिया कि इंद्र की चादर नत्थो पर डलवा दी जाए। चादर डालने का अर्थ पुनर्विवाह होता है। तेरहवीं के बाद इंद्र के सामने यह प्रस्ताव रखा और उसकी मंशा जाननी चाही तो वह एकदम तैयार हो गया। उसने कोई एतराज या ना-नुकर नहीं की। फैसला किया गया कि अतर सिंह की छमाही के बाद इंद्र व नत्थो का विवाह कर दिया जाएगा। नत्थो ने भी इसे अपनी नियति स्वीकारते हुए 'हाँ' कह दी।

एक दिन नत्थो सुबह पशुओं के बाड़े में भैंस दुहने गई तो इंद्र ने पीछे से आकर उसे अपनी बाँहों में कस लिया। नत्थो ने छूटने की कोशिश की तो इंद्र ने कहा, "देखो हमारे भाग्य का फैसला तो ऊपर वाले ने कर दिया। तुम्हें तो मेरी होना ही है। इस रिश्ते पर किसी को आपत्ति नहीं है। तुम्हें भी स्वीकार है। फिर क्यों खुद तड़प रही हो और साथ में मुझे भी तड़पा रही हो। फर्क केवल इतना-सा है कि जो कुछ समय बाद होने वाला था वह थोड़ी जल्दी हो रहा है।'

नत्थो को लग रहा था कि यह इंद्र की ज्यादती है। उसकी आत्मा देवर के इस आग्रह को स्वीकार नहीं कर पा रही थी। कुछ इंद्र के दिये हुए तर्क, कुछ देह की माँग, इस पर इंद्र का निर्दोष सा लगता अनुरोध यह सब एक साथ नत्थो की चेतना पर हावी हो गया। वह आपा हार गई। छमाही से पहले दो दफा ऐसा हो चुका था। छमाही से अगले दिन नत्थो का देवर के साथ विवाह होना था। जेठ ने सारा जरूरी सामान मँगवा कर रख लिया था। नत्थो के मायके से उसके दोनों भाई भी आ गये थे। पण्डित भी पधार चुके थे। मगर इस आयोजन के केन्द्र इंद्र का कोई पता नहीं था। काफी देर इन्तजार करने के बाद भी जब इंद्र नहीं आया तो नत्थो के भाई ने उसके ससुर से पूछा, 'मौसा जी, आपने इंद्र से पूछ तो लिया था ना? कहीं ऐसा तो नहीं है कि वह इस रिश्ते का इच्छुक न हो और आप लोगों ने उस पर दबाव डाल कर जबरदस्ती हाँ कहलवाई हो।'

नत्थो के ससुर ने कहा, 'नहीं बेटा! हमें पता है ये जिंदगी भर का संबंध है। जबरदस्ती थोपने वाला काम नहीं है। हमने उससे इस बारे में साफ-साफ पूछा था। कोई दबाव नहीं डाला था। उस समय तो उसने अपनी खुशी से यह प्रस्ताव स्वीकार किया था। पता नहीं अब ऐसा क्या हो गया? मुझे तो चिन्ता होने लगी है।'

लोग अभी कुछ सोच ही रहे थे कि पड़ोस के गाँव में रहने वाला इंद्र का एक दोस्त आता हुआ दिखाई दिया। उसने आकर सबका अभिवादन किया और बोला, 'मैं इद्र का संदेश लेकर आप लोगों के पास आया हूँ। उसे यह विवाह स्वीकार नहीं है। उसने एक बार हाँ कर दी थी। इसलिये वह सबके सामने हाँ कह कर मुकरने से शर्मिन्दा है, वह भाग कर मेरे पास आया और उसने सारी बात बता कर मुझे कहा, 'मैं आप लोगों को सब बता दूँ। इसीलिये मैं यहाँ पर आया हूँ।'

यह सुनकर सब सकते में आ गये। नत्थो पर जो गुजर चुकी थी और अब उसकी आशाओं पर जो वज्राघात हुआ था, उसके साथ जो छल हुआ था, उसकी आत्मा पर जो घाव लगे थे उन्हें बस वही जानती थी। नत्थो के भाईयों पर तो जैसे बिजली गिर पड़ी। कोई कुछ बोल नहीं पा रहा था। सब खामोश हो गये थे। किसी के पास जैसे शब्द ही नहीं थे। पूरे वातावरण में एक दमघोटू मौन पसर गया था। आखिर नत्थो के भाई ने मौन तोड़ते हुए कहा, 'मौसा जी, अब हमें इजाजत दीजिए। नत्थो को ले जाते हैं। इसके पास तो कोई बाल बच्चा भी नहीं है। कहीं और घर देखकर इसका ठिकाना बनाने का काम भी तो करना ही है।'

नत्थो के ससुर के पास कोई उत्तर नहीं था। उसके जेठ ने कहा, 'अब हम क्या कहें। वह आपकी बहन है। आप उसके बारे में जो कुछ सोचेंगे उसके भले के लिए ही सोचेंगे।'

भाईयों ने नत्थो से उनके साथ चलने का आग्रह किया। वह बोली, 'नहीं भाई, आज नहीं। मैं अपने आप चली आऊँगी। फिलहाल आप चले जाइए।' 'क्या करेगी यहाँ रहकर?' बड़े भाई ने पूछा।

'ठीक कहते हो भाई, यहाँ अब कुछ करने को है भी नहीं। बस दो-चार दिन की ही तो बात है। कह तो रही हूँ मैं आप चली आऊँगी।' नत्थो बोली, 'मैं किसी गैर के ठिकाने पर तो नहीं हूँ। आखिर यह मेरे स्वर्गवासी पति का घर है। आप चिंता मत कीजिये।' भाई निरुत्तर होकर वापस चले गये।

दो दिन बाहर रहने के बाद इंद्र घर लौट आया। नत्थो ने उससे पूछा, 'तुमने ऐसा क्यों किया इंद्र। बस मुझे अपने इस सवाल का उत्तर चाहिये। इससे अधिक कुछ नहीं।' इंद्र ढिठाई से बोला, 'मैं जवान हूँ, मेरे भी कुछ अरमान हैं। तुमने यह कैसे सोच लिया कि मैं तुम जैसी फूटी मटकी को सारी उम्र गले में लटकाए घूमता रहूँगा।'

'यही तो मैं जानना चाहती हूँ कि यदि तुम्हारे मन में यही कुछ था तो मेरे साथ ऐसा खेल क्यों खेला?'

'अरे बार-बार मुझे ही दोष दे रही हो, मुझसे सवाल पूछ रही हो? जो कुछ हुआ उसमें तुम भी तो बराबर की भागीदार हो। मैंने जबरदस्ती तो नहीं की। तुमने कहीं इंतजार किया भाई की छमाही का? छमाही पर सब कुछ स्पष्ट हो जाना था।' नत्थो जैसे आसमान से गिरी। इंद्र ने एक बेहद कुटिल चाल चली थी उसके साथ। उसे अब लगने लगा कि उसे छमाही तक ऐसी स्थिति से स्वयं को बचाना चाहिए था। मगर अब तो तीर कमान से छूट चुका था। इंद्र ने बेशर्मी से कहकहा लगाया और बोला, 'चाहो तो यहीं टिकी रहो। यकीन करो अपनी शादी हो जाने के बाद भी मैं तुम्हें अनदेखा नहीं करूँगा। विश्वास रखो। मैं झूठ नहीं कह रहा।'

नत्थो की अन्तर्मन जल उठी। पाँचवें दिन नत्थो ने अपने ससुर से कहा, 'बापू जी, मुझे मायके छोड़ आइए।'

ससुर बोले, 'ठीक है बेटी, जैसा तुम चाहो।'

नत्थो मायके चली आई। चलते समय ससुर ने कहा, 'बेटी अतर सिंह के हिस्से में तीन एकड़ जमीन है। एक पशु बाँधने का बाड़ा है। जिस घर में रहते हैं उसका तीसरा हिस्सा अतर सिंह का है। इन सब की मालिक अब तुम हो। तेरे कुछ जेवर भी हमारे पास हैं। इन का तुम जैसे चाहो इस्तेमाल कर सकती हो। भगवान ने जो कुछ किया वह उसकी मर्जी। मगर मैं तुम्हारे साथ किसी प्रकार का अन्याय नहीं होने दूँगा।' नत्थो ने अपने संदूक की चाबी ससुर के हाथ पर रखी और कहा, "बापू जी, मैं वहाँ रहते हुए भी इसी परिवार का हिस्सा हूँ। जब भी आपको जरूरत हो पता कर देना, मैं चली आऊँगी।' यह कह कर नत्थो ने ससुर के चरण स्पर्श किये। उन्होंने सिर पर हाथ रख कर कहा, 'सुखी रहो।' ससुर चले गये। नत्थो के साथ जो गुजरी थी, उससे उसको गहरी चोट लगी थी। पुरुष जाति से तथा पुनर्विवाह के नाम से ही वह चिढ़ उठती थी। उसे विवाह के नाम से वितृष्णा हो गई थी। उसने आपा मारना सीख लिया था। दोनों भाभियों ने कुछ दिन तो नाक, मुँह चढ़ाया मगर नत्थो की कर्मशीलता तथा शालीनता ने उनके मुँह पर ताला लगा दिया। इस प्रकार नत्थो सारे गाँव की बुआ बन गई। वह गाँव के लिये नत्थो बुआ थी, तथा भाभियों के लिये मुफ्त की नौकरानी। फकत रोटियों की मजदूर।

नत्थो ने ससुराल से पूर्णतया नाता नहीं तोड़ा था। देवर की शादी में जाकर उसने पिछले प्रकरण का पटाक्षेप कर दिया था। यदि वह शादी में नहीं जाती तो चादर चढ़ाने वाले दिन इंद्र के भागने की कहानी फिर से ताजा हो सकती थी। सुख-दुख में या परिवार में होने वाले बच्चे के जन्म के समय ससुराल में दो-चार दिन रह कर वापस मायके चली जाती थी।

एक दिन नत्थो के ससुर चल बसे। उम्र तो ज्यादा नहीं थी मगर जवान बेटे की मौत ने उनको गहरा सदमा दिया था। ससुर की मृत्यु होने पर नत्थो को लगा जैसे वह अनाथ हो गई। सिर पर आशीर्वाद का हाथ रखने वाले ससुर के चले जाने के बाद नत्थो का ससुराल जाना बहुत कम हो गया था।

एक दिन नत्थो के जेठ का बेटा उसके मायके आया और बोला, 'काकी, सरकार एक प्रोजेक्ट लगाने के लिये हमारी जमीन खरीद रही है। सात लाख प्रति एकड़ के हिसाब से पैसा मिलेगा। आप अपने हिस्से की तीन एकड़ जमीन की हकदार हैं।

'आप मेरे साथ चलिए। कल मुआवजा बाँटने वाला अधिकारी आ रहा है। यह काम कल ही हो जाएगा।'

नत्थो रवि के साथ ससुराल चली गई। पुनर्वास अधिकारी ने उन लोगों को चेक दिये जिनके बैंक में खाते खुल हुए थे। जिनके खाते नहीं थे उनको नकद रुपया गिनकर दे दिया। नत्थो के हाथ में इक्कीस लाख की नकद रकम थी। घर आकर नत्थो ने कहा, "पहले तुम्हारे काका गये, पति नहीं रहे तो ससुर का स्नेह भरा हाथ सदा सिर पर रहा। फिर वे भी नहीं रहे। यह जमीन का टुकड़ा था जिसे देखकर कहीं ना कहीं पति व ससुर के जीवित होने का अहसास बना रहता था। इस घर से लगाव बना रहता था। आज यह डोर भी कट गई। अब यहाँ का मोह छोड़ना होगा। मेरी उम्र भी बढ़ती जा रही है। पता नहीं कब बुलावा आ जाए।' यह कह कर नत्थो ने चाबी निकाली। अपनी संदूक खोली और उसमें से एक डिब्बा निकाला। उसमें से कर्णफूल तथा पाजेब निकाल कर जेठानी को देते हुए कहा, 'यह बेटी की शादी के लिये कर्णफूल और बेटे की बहू के लिये यह पाजेब मुँह दिखाई के लिये मेरी ओर से।'

'क्या कह रही हो, शादी होगी तो क्या तुम नहीं आओगी? अपने हाथों से देना।' ठीक है, मगर वक्त का कुछ पता नहीं होता, तुम अपने पास ही

रखो। मैं आकर तुमसे माँग कर उनको दे दूँगी। मगर अब तो ये तुम्हें ही रखने होंगे।' अब नत्थो के हाथों में एक अंगूठी और छोटी सी चेन बची हुई थी। उसने देवरानी को बुलाया और कहा, "देखो ये चेन और अँगूठी मेरी तरफ से तुम्हारे बच्चों के लिये शादी का उपहार।'

देवरानी बोली, 'अभी अपने पास ही रखो इनको, अपने पास रहने दो। वक्त आने पर तुम्हीं दे देना।'

नत्थो बोली, 'तुम दो या मैं, बात तो एक ही है ना।'

अब नत्थो खड़ी हो गई और बोली, 'मेरे पीछे किसी के बीच में मन मुटाव न हो। इसलिए मैं स्वयं ही सारा निपटारा कर देती हूँ। मेरे हिस्से का पशुओं का बाड़ा देवर का और घर का तीसरा भाग जेठ जी को सौंपती हूँ।' अब नत्थो ने पैसे निकाले। पाँच लाख देवर को तथा पाँच लाख जेठ को दे दिये।

पचास हजार गाँव की चौपाल की मरम्मत तथा पचास हजार स्कूल की पगडण्डी पर ईंटें बिछाने के लिये अलग से जेठ को पकड़ा दिये। यह सब करने के बाद नत्थो बोली, 'चलो हो गई मेरी वसीयत।'

नत्थो ने बची हुई चीजें सँभाली। दस लाख रूपये कपड़े में बाँध कर थैले में रखे। एक जोड़ा झुमकी तथा दो चूड़ी अभी भी डिब्बे में बची हुई थी। नत्थो ने उनको भी संभाल कर रख लिया। अगले दिन उसे मायके वापस जाना था। रात के समय जेठ-देवर व परिवार के अन्य सदस्य सिर जोड़ कर बैठे। इस मंडली में नत्थो को शामिल नहीं किया गया।

जेठ ने कहा, 'कितनी चालाक औरत है, हमारे भाई की जमीन के दस लाख लेकर मायके वालों को देने चली है। आज एक बात मेरी समझ में आ रही है कि घर की बहू के विधवा हो जाने पर देवर या जेठ की चादर डालने की प्रथा कितनी जरूरी और कितनी सही है। यदि उस दिन इंद्र मान जाता तो आज सारी की सारी जमीन हमारी होती। इस चुड़ैल को एक पैसा भी नहीं मिलता।'

इंद्र बोला, 'मैं तो सोच रहा था कि पीहर में इसे कौन बिठा कर खिलायेगा। भाई इसकी कहीं और शादी कर देंगे। मुझे अंदाजा नहीं था कि यह इतनी सख्त जान निकलेगी कि सारी उम्र मायके में निकाल देगी और हमारा पीछा भी नहीं छोड़ेगी।' खैर अब तो जो हो चुका था उसे बदला जाना संभव नहीं था।

देवरानी बोली, 'शुक्र करो उसका कि उसने दस लाख रुपये और काफी सारा जेवर हमें दे दिया। यदि वह एक पैसा भी नहीं देती तब तुम क्या कर लेते उसका।' यह सुनकर जेठ का जवान होता लड़का तमतमा कर बोला, 'यदि वह हमें एक पैसा भी नहीं देती तो सुन लो ऐसे चुप बैठने वाले हम भी नहीं थे। यहीं गर्दन दबा कर जमीन में गाड़ देते।' नत्थो को इस बातचीत का भान भी नहीं था।

अगले दिन नत्थो चलने लगी तो जेठ का बेटा रवि बोला, "काकी, तुम्हारे पास काफी पैसा है। रास्ते में खतरा हो सकता है। चलो मैं तुम्हें मोटर साइकिल पर बिठा कर छोड़ आता हूँ।' नत्थो बोली, 'बेटा सिवाय तुम लोगों के और भला किसको पता हो सकता है कि इस बुढ़िया के पुराने थैले में क्या रखा है। मैं चली जाऊँगी।' पर रवि की जिद के आगे उसे हारना पड़ा। रास्ते में रवि सड़क छोड़ कर पगडण्डी पर उतर गया। नत्थो ने पूछा तो वह बोला, 'काकी, थोड़ी ही दूर तक कच्चा है, छोटा रास्ता है। जल्दी पहुँच जायेंगे।'

मोटर साइकिल कच्चे मार्ग पर चलने के कारण उछल रही थी। अचानक उसके पैर में कुछ चुभ गया। नत्थो ने सीट के साथ बन्धे थैले की तरफ देखा तो उसकी रूह काँप गई एक तीखा खंजर छिपा कर रखा गया जो झटके खाकर अपनी जगह से सरक कर बाहर दिखाई देने लगा था। नत्थो ने अपने को संभालकर। बोली, 'रे रवि! जरा मोटर साइकिल रोक तो बेटा। पता नहीं क्या हुआ। पेट में जोर का दर्द हो रहा है। देखूं यदि आस पास कहीं पानी दिखाई दे जाए। शौच जैसा जी हो रहा है।' रवि ने मोटर साइकिल रोक दी। नत्थो पोटली समेत खेतों में घुस गई और छिपने या भागने की जुगत लगाने लगी। भागना ज्यादा कठिन था उसे बाजरे की पूलियों की छ्योरी दिखाई दी। वह दो पूली हटा कर अन्दर घुस कर बैठ गई। पूलियों को उसने वहीं पर जमा दिया जहाँ से उठाया था।

काफी देर इंतजार करने के बाद जब नत्थो नहीं लौटी तो रवि ने जोर-जोर से आवाजें लगाई। कोई उत्तर नहीं मिला तो रवि को लगा कि उसकी योजना काकी ताड़ गई है। अब वह हाथ आने वाली नहीं है। वह जोर-जोर से बड़बड़ाने लगा, 'साली हरामजादी! हमारे बाप दादा की जमीन से मिली दौलत को लुटायेगी, चौपाल की मरम्मत करवायेगी, दानवीर कर्ण की बहन, अपने मायके वालों को देगी। साली कुत्तिया यह

जमीन क्या तेरे बाप ने तुझे दहेज में दी थी।'

नत्थो सब सुन रही थी। रवि का बड़बड़ाना जारी था। 'यह हरामजादी औरत, एक बार दिख जाये तो काम तमाम।' नत्थो थर-थर काँप रही थी। गर्मियों की दोपहर। खेतों में कोई भी नहीं था। काफी देर बाद उसे रवि की मोटर साइकिल जाने की आवाज सुनाई दी। काफी देर बाद नत्थो बाहर निकलने का हौसला जुटा पाई। दोपहर ढल चुकी थी। खेतों में आवागमन होने लगा था। नत्थो ने एक पूली हटा कर बाहर देखा। उसे दो महिलायें दिखाई दी जो सिर पर घास के गट्टर रखे जा रही थी। नत्थो बाहर आकर उनके पीछे-पीछे चल कर पक्की सड़क पर निकल आई। अब तक वह सँभल चुकी थी। उसके चेहरे के हाव-भाव को देखकर किसी को ऐसा नहीं लगता था कि एक भयंकर तूफान अभी-अभी उसके ऊपर से गुजर कर गया है। नत्थो ने रास्ता पूछा। मायके जाने वाली बस पकड़ी और अँधेरा होते नत्थो अपनी कोठरी में थी।

'आ गई नत्थो बी जी?' बड़ी भाभी ने आते ही पूछा। 'हाँ आ गई भाभी!' कह कर नत्थो चुप हो गई। रात को कोई बातचीत नहीं हुई।

अगले दिन सुबह चाय नाश्ते के बाद नत्थो अपने भाई-भाभी के सामने आकर खड़ी हो गई। नत्थो अब हालात को समझने की कोशिश करने लगी थी। नत्थो ने झुमकी छोटी भाभी को तथा कंगन बड़ी भाभी को दे दिये। बोली, 'मैं उस घर से अपना सारा सामान ले आई हूँ।'

'कहाँ है?" छोटी भाभी बोली, 'बीबी जी, जेवर तो आपके पास और भी हैं।'

नत्थो बोली, 'जिस परिवार ने मेरी अमानत सँभाल कर रखी। उस परिवार के प्रति भी तो मेरा कुछ फर्ज बनता है। दो जेवर जेठ के बच्चों को तथा दो देवर के बच्चों को दे आई हूँ।'

अब पूछताछ विभाग भाइयों के अधीन था।

'जमीन कितने की बिकी नत्थो?'

'इक्कीस लाख की।' नत्थो बोली।

'पैसा किसके पास है?'

'मेरे पास ही है।'

'क्या करोगी इतनी बड़ी रकम अपने पास रख कर। खतरा भी तो है।'

'हाँ भाई, खतरा तो है।' नत्थो के दिमाग में मोटर साइकिल के थैले का खंजर घूम रहा था।

नत्थो बात आगे बढ़ाते हुए बोली, 'पैसे पूरे नहीं हैं। ग्यारह लाख तो मैंने खर्च कर दिये हैं।'

'हैं? कहाँ खर्चे?' भाई की आवाज में आश्चर्य एवं आक्रोश दोनों का मिश्रण था।

'पाँच लाख देवर के परिवार को, पाँच जेठ के परिवार को और एक लाख गाँव की चौपाल व गली की मरम्मत के लिये दान कर दिये?'

'इनको भी कहीं खर्च कर देती बहना। यहाँ लाने का कष्ट क्यों उठाया?' भाई की आवाज नत्थो के कलेजे को चीर गई।

'भाई, देखो मैंने अपनी समझ से जो उचित लगा वही किया है। दोनों परिवार मेरे हैं। आप लोगों के साथ मेरा जीवन जुड़ा है। उस परिवार के साथ मेरे पति का नाम व मेरे ससुराल के रिश्ते जुड़े हैं। मेरे पास जो कुछ है यह दोनों परिवारों के लिये ही है। जमीन बिक जाने के बाद जो पैसा मिला इसी हिसाब से उनको दे दिया और जो बचा है वह बैंक में जमा करवा कर तुम्हारे नाम वसीयत बनवा देती हूँ। जब तक जीवित हूँ तब तक खाता मेरे नाम रहेगा, मेरे बाद तुम दोनों को जरूरत पड़ने पर इस पैसे का प्रयोग कर सकते हो।'

भतीजे के चाकू ने नत्थो को दुनियादारी सिखा दी थी। भाइयों के थोबड़े सूज गये थे। भाभियों का व्यवहार बदल गया था। नत्थो समझ नहीं पा रही थी कि उससे गलती कहाँ हुई है। वह बार-बार भाइयों से अनुरोध कर रही थी कि बैंक में खाता खुलवा दो। उन्होंने टालमटोल का रवैया अपनाया हुआ था। एक अनजाना सा भय नत्थो को घेरे हुए था। वह हवा में षड्यन्त्र सूंघने की कोशिश कर रही थी। एक रात वह अपनी कोठरी से बाहर निकली। उसे आवाजें सुनाई दीं जो भाई की बैठक से आ रही थी।

बड़ी भाभी व दोनों भाई तथा बड़े भाई का बेटा बैठे मन्त्रणा कर रहे थे।

भाभी की आवाज सुनाई दी, 'देखा अपनी बहन को, रांड ने रंडापा काटा हमारे सिर पर और जब पैसा हाथ में आया तो उसी परिवार के लिये मोह जाग गया, जिसको छोड़ कर हमारे दरवाजे आ लगी थी।'

छोटा बोला, 'इस बात को दूसरी तरह सोच कर देखा जाए तो नत्थो की बात गलत भी नहीं कही जा सकती। आखिर वह जमीन हमारी तो नहीं है। वह हमें आधा दे भी रही है।'

'हाँ दे रही है, गिन लेना जा कर नकद नोट। वह महारानी तो बैंक में

खाता खुलवाने पर अड़ी है।'

'तो क्या हो गया? खुलवा लेने दो खाता। जरूरत पड़ने पर जीजी हमें मना तो नहीं करेगी। आखिर कहाँ लेकर जाना है उनको।' छोटे ने हल्का-सा प्रतिवाद किया।

'तो क्या हम उसके सामने भिखारी बन कर भीख मांगेंगे?' भाभी आँखें तरेर कर बोली। नत्थो का कलेजा थर्रा गया। वह दम साध कर सुनती रही। 'तो अब हम क्या करें?' आवाज बड़े भाई की थी।

'अरे रात को सारा पैसा निकाल लेते हैं। घर का सामान इधर-उधर बिखेर कर सवेरे छाती पीटना कि हमारे घर चोरी हो गई। नत्थो जीजी के पैसों के साथ-साथ हमारा जेवर भी चोर निकाल कर ले गए।' मशविरा भाभी का था।

'हे भगवान! जिस घर को अपना समझा, जवानी के दिन कर्मयोगिनी बन कर निकाल दिये। भतीजे-भतीजियों का पाखाना धोया। भाभियों की बांदी बन कर जीवन निकाल दिया और आज ये लोग... । मैं तो सोचती थी कि दोनों घर मेरे हैं। मगर आज पता चला मेरा कोई घर नहीं है।'

नत्थो फैसला कर चुकी थी। गाँव में लड़कियों का स्कूल पाँचवीं तक का था। जगह तो थी मगर कमरों की कमी के कारण स्कूल दसवीं तक का नहीं हो पा रहा था। नत्थो सुबह उठते ही पैसों की पोटली लेकर गाँव के सरपंच के घर गई। बोली, 'देखो बेटा, यह पैसा तुम्हारे स्वर्गीय फूफा जी की जमीन के मुआवजे में मिला है। गाँव की बेटियाँ मेरी बेटियाँ हैं। तुम इस पैसे से लड़कियों के स्कूल में कमरे बना कर अपने फूफाजी के नाम का पत्थर लगवा देना। तुम्हारा भला होगा बेटा और हाँ एक कोठरी भी बनवा देना कमरों के साथ। शायद मुझे जरूरत पड़ जाए।'

युवा सरपंच ने पूरी ईमानदारी व नेकनीयती से काम किया। कुछ पैसा अनुदान भी मिला। छह लाख रुपये नत्थों के खर्च हुए। बीच वाले कमरे पर पत्थर लगवाया, जिस पर लिखा था, 'कन्या विद्यालय की यह इमारत श्रीमती नत्थो देवी ने अपने पति स्वर्गीय श्री अतरसिंह की स्मृति में बनवाई।'

नत्थो के पास चार लाख रुपये अब भी बचे हुए थे। भाइयों की मंशा को भाँप कर उसने दोनों भाईयों को दो-दो लाख रुपये नकद दे दिये। चार लाख नकद दे दिये। जेवर दे दिया। जीवन भर काम किया मगर इतना करने के बाद भी घर में नत्थो का सम्मान नहीं था। एक दिन नत्थो ने अपने कपड़े समेटे और स्कूल में बनी कोठरी में आकर डेरा जमा लिया। भाइयों ने एतराज किया। मगर नत्थो ने कहा, 'मैं इसके लिए किसी को दोषी नहीं ठहराऊँगी। तुम्हारी बदनामी भी नहीं करूँगी। मैं तो यहाँ अपनी मर्जी से आई हूँ। किसी दुख या तकलीफ के कारण नहीं।'

नत्थो ने किसी के सामने अपना दिल नहीं खोला। सभी अध्यापिकाएँ नत्थो का बेहद सम्मान करतीं। लड़कियाँ भी नत्थो बुआ कहकर फूली नहीं समाती। एक दिन नत्थो संसार का सफर पूरा कर गुजर गई। नत्थो की इच्छा के अनुसार उसका अन्तिम संस्कार स्कूल के ही एक कोने में किया गया। अब बचे नत्थो की देह से उतरने वाले गहने। सवाल था उनको किसे सौंपा जाए। तभी मुख्याध्यापिका बोली, 'इनको बेचकर नत्थो देवी की एक प्रतिमा स्कूल के प्रवेश द्वार पर लगा दी जाए।'

बात सबको ठीक लगी। नत्थो की भाभी उसके मरने की खबर सुनकर बोली, 'अच्छा, रांड मर गई। न जाने कब तक छाती पर मूंग दलती।'

एक दिन नत्थो के भाई ने देखा स्कूल के दरवाजे के निकट एक चबूतरा बना है।

उस पर नत्थो की संगमरमर की प्रतिमा स्थापित कर दी गई है। उसके ऊपर गोल छतरी लगा दी गई है। छात्राएँ प्रतिमा को फूल भेंट कर रही हैं। वह तमतमाया हुआ अपने घर जा कर बोला, 'क्या कह रही हो तुम? रांड मर गई। अरे नत्थो मरी नहीं। जाकर तो देखो वह तो स्कूल के दरवाजे के पास चबूतरे पर बैठी मुस्कुरा रही है।'❑

चौथी सदी ईसापूर्व धम्मदिन्ना महाथेरी कहती है

'छन्दजाता अवसायी, मनसा च फुटा सिया।
कामेसु अप्पटिबद्धचित्ता, उद्धंसोता ति वुच्चती'ति

अनुवादः

जिसके अंदर परम लक्ष्य के लिए इच्छा उत्पन्न हुई है और इस इच्छा ने जिसके पूरे चित्त को भर दिया है; जिसका चित्त सभी भोगों में बंधा नहीं, वही ऊर्ध्व स्रोता कहलाती है।

थेरीगाथा, गौतम बुक सेंटर, 2010, पृ. 10